A Study of Emotional Intelligence and Adjustment in relation to Academic Achievement among Residential and Non Residential School's Students of Rajasthan

राजस्थान के आवासीय तथा गैर आवासीय विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन का शैक्षिक उपलब्धि के सम्बंध में अध्ययन

पीएच.डी. (शिक्षा) उपाधि के लिए

पंजीकरण हेतु शोध प्रस्ताव

(शिक्षा संकाय)

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

2017

शोध निर्देशक

डॉ. आयुष्मान गोस्वामी

सह आचार्य (शिक्षा)

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर

शोधार्थी

सुनील कुमार

MAHARSHI DAYANAND SARASWATI UNIVERSITY, AJMER

Appendix-VI

Certificate by Supervisor

Certified that:

1 I am willing to guide the research of **Mr. SUNIL KUMAR** on the above subject if he registered for Ph.D.

2 To the best of my knowledge, the subject selected has not been studied and is not being studied so far in any University.

3 The subject is of sufficient scope to keep the candidate engaged for two year.

4 The subject will lead to a valuable contribution. I have seen and approved the outline and bibliography, etc. submitted by the candidate.

5 Necessary facilities are available in the department for the above research work, (certificate from principal/head university department with regards to facilities available is enclosed.)

6 I have...09....Research candidate registered under my supervision and the serial number of this candidate whose application being forwarded for registration is………….………….

7 The candidate is not in a close relation (the term of close relation is defined in the examination ordinance of the University).

8/12/17

Signature of the supervisor with date

सह-आचार्य
Associate Professor
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर
Regional Institute of Education, AJMER

CERTIFICATE

Certified that the available facilities will be extended to **Mr. SUNIL KUMAR** for research work if he registered for Ph.D.

Signature of the Principal/
Director of the Institution
with date

8/12/17

Signature of the Supervisor /Head
Department with date

8/12/17

विभागाध्यक्ष-शिक्षा
Head Deptt. of Education
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
Regional Institute of Education
अजमेर (राज०)/ Ajmer (Raj.)

MAHARSHI DAYANAND SARASWATI UNIVERSITY, AJMER

APPENDIX- IV

FORMAT FOR OUTLINE OF PROPOSED RESEARCH WORK

1. **Name of Scholar (In English)** : SUNIL KUMAR

   (In Hindi) : सुनील कुमार

2. **Title of Research Work** : राजस्थान के आवासीय तथा गैर आवासीय विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन का शैक्षिक उपलब्धि के सम्बंध में अध्ययन

   (In Hindi) :

3. Location
   a. Institution / Department where the work is to be done.
   b. Geographical area of investigation: If any

4. Importance of proposed Investigation.

5. Review of work already done on the subject of proposed research study.

6. Research gaps identified in the proposed field of investigation.

7. Objectives.

8. Major Hypothesis, If any

9. Materials and methods/Research methodology.

10. Chapter wise details of proposed research:

11. Bibliography

सुनील कुमार
08/12/17
Signature of
Candidate with date

Outline Approved

8/12/17
A. Goswami

Name and signature of supervisor
With date and seal

सह-आचार्य
Associate Professor
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर
Regional Institute of Education, AJMER

Facilities available for the work:

All the necessary research facilities required for the proposed study are available at the Department of Education, Regional Institute of Education, Ajmer.

8/12/17

Signature

~~Supervisor~~ / Head

Department of Education,

Regional Institute of Education, Ajmer

Head Deptt. of Education
Regional Institute of Education
Ajmer (Raj.)

Outline of Proposed Research Work
Synopsis for Ph.D.

1 शोधार्थी का नाम

Name of Scholar	(In English)	–	SUNIL KUMAR
	(In Hindi)	–	सुनील कुमार

2 शोध कार्य का शीर्षक

Title of the Research Work

(In English)	–	A Study of Emotional Intelligence and Adjustment in relation to Academic Achievement among Residential and Non Residential School's Students of Rajasthan
(In Hindi)	–	राजस्थान के आवासीय तथा गैर आवासीय विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन का शैक्षिक उपलब्धि के सम्बंध में अध्ययन

3 स्थिति

Location

a. Institution/Department where the work is to be done	–	शिक्षा विभाग क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर
b. Geographical area of Investigation, if any	–	शोध कार्य हेतु राजस्थान राज्य का चयन।

4 शोध अध्ययन का औचित्य :–

विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिये शिक्षा अत्यन्त आवश्यक है। विद्यार्थियों की सफलता अनेक कारकों पर निर्भर करती है, जिनमें उनके व्यक्तिगत तथा वातावरणीय दोनों प्रकार के कारक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते है। विद्यार्थियों का बौद्धिक स्तर, अभिक्षमता, संवेग, मूल्य, अध्ययन आदत, समायोजन आदि अनेक कारक हैं, जो उनकी उपलब्धि को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। इन सभी कारकों में बुद्धि को प्रमुख स्थान दिया जाता है। यह माना जाता है कि जिनमें सीखने की क्षमता, तार्किक योग्यता एवं अमूर्त चिन्तन की योग्यता उच्च कोटि की होती है, वे अध्ययन में भी उच्च परिणाम प्राप्त करते है। इस संबंध में अनेक अध्ययन भी किये गये है। शोध अध्ययनों में बुद्धि एवं उपलब्धि में सकारात्मक सम्बंध पाये गये। विगत कुछ वर्षो से इस विचारधारा में तीव्रता से परिवर्तन हुआ है। कुछ विचारकों का मानना है कि व्यक्ति की सफलता उसकी बुद्धि पर ही निर्भर करती है लेकिन सफलता का अधिकतम श्रेय संवेगात्मक बुद्धि एवं सामाजिक बुद्धि को मिलता है। उच्च संवेगात्मक बुद्धि के विद्यार्थी स्वयं को प्रत्येक परिस्थिति में समायोजित कर लेते है।

संवेगात्मक बुद्धि से तात्पर्य व्यक्ति विशेष की उस समग्र क्षमता से है जो उसे उसकी विचार प्रक्रिया का प्रयोग करते हुए अपने तथा दूसरों के संवेगो को जानने, समझने तथा उनकी ऐसी उचित अनुभूति एवं अभिव्यक्ति करने–कराने में इस प्रकार मदद करे कि वांछित व्यवहार तथा उसके सापेक्ष अनुक्रियाएँ कर सके। जिनसे उसे दूसरों के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए अपना समुचित हित करने हेतु अधिक से अधिक अच्छे अवसर प्राप्त हो सकें।

संवेगात्मक बुद्धि शब्द की व्युत्पत्ति के बारे में आम राय है कि पीटर सैलोवी तथा जासन जैक मेयर द्वारा 1990 में प्रकाशित **'संवेगात्मक बुद्धि'** नामक प्रपत्र द्वारा हुई। इस प्रपत्र में संवेगात्मक बुद्धि को वैज्ञानिक रूप में परीक्षणीय बुद्धि के रूप में परिभाषित किया गया।

''संवेगात्मक बुद्धि, भावनाओं के प्रत्यक्षीकरण, विचारों को सहायता देने के लिए भावनाओं को उत्पन्न करने तथा भावनाओं तक पहुँचने, भावनाओं को समझने और विचारपूर्वक भावनाओं को नियंत्रित करने की योग्यता है, जिससे भावनात्मक और

ज्ञानात्मक वृद्धि सुनिश्चित की जा सके।'' दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि संवेगात्मक बुद्धि के चार भाग निम्नलिखित है :–

- भावनाओं का प्रत्यक्षीकरण या भावनाओं को महसूस करना।
- विचारों को सहायता प्रदान करने के लिए भावनाओं का प्रयोग करना।
- भावनाओं को समझना।
- भावनाओं का प्रबन्धन।

संवेगात्मक बुद्धि के सम्प्रत्यय के दार्शनिक आधार को स्पिनोजा (1677) के लेखों में देखा जा सकता है। संवेगात्मक बुद्धि के द्वारा व्यक्ति अपने संवेगों को पहचानता है, संवेगों का उचित प्रकटीकरण करता है एवं दूसरों के संवेगों को समझकर उसके सामने वैसा ही व्यवहार करता है।

संवेगात्मक बुद्धि को लोकप्रिय बनाने का श्रेय अमेरिकन मनोवैज्ञानिक **डेनियल गोलमैन** को ही जाता है।

डेनियल गोलमेन के अनुसार – ''संवेगात्मक बुद्धि एक योग्यता है जिससे हम अपनी स्वयं की भावनाओं तथा अन्य व्यक्तियों की भावनाओं को पहचानते है, जिससे हम स्वयं को अभिप्रेरणा देते हैं तथा अपनी भावनाओं को अन्य व्यक्तियों के साथ सम्बंधों के लिए प्रबंध करते है।''

गोलमेन ने संवेगात्मक बुद्धि के 5 महत्त्वपूर्ण आयाम बताए है जिन पर संवेगात्मक बुद्धि कार्य करती है। इन आयामों को निम्न विवरण द्वारा समझा जा सकता है:–

- आत्म सजगता (Self awareness)– अपनी आन्तरिक स्थिति, प्राथमिकताओं और अंतःज्ञान को जानना
- आत्म नियंत्रण (Self Regulation)– अपनी आन्तरिक स्थिति तथा आवेग का नियंत्रण या प्रबन्ध करना
- अभिप्रेरणा (Motivation)– लक्ष्य तक पहुँचने के लिए भावात्मक प्रवृत्ति का मार्गदर्शन
- तद्नुभूति (Empathy)– दूसरों की भावनाओं, आवश्यकताओं तथा चिन्ता की जानकारी
- सामाजिक कौशल (Social Skill) – प्रभावी युक्ति को काम में लाना

समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने व्यवहार में परिवर्तन कर अपने वातावरण से सामंजस्य स्थापित करता है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से जीवन एक निरंतर चलने वाला क्रम है। जिसके द्वारा व्यक्ति बाह्य वातावरण एवं स्वयं की शारीरिक व मानसिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने में लगा रहता है। व्यक्ति खाने–पीने के लिए, आश्रय और प्रेम ढूढ़ने के लिए, सहमति और मैत्री पाने, सुरक्षा और सम्मान पाने इत्यादि में हमेशा लगा रहता है। समायोजन को एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं और परिस्थितियों की मांगो के मध्य शारीरिक एवं मानसिक सन्तुलन स्थापित करता है।

किसी भी शोध अध्ययन का मूल्यांकन उसकी नवीनतम उपयोगिता, प्रासंगिकता तथा उसके निष्कर्षों की विस्तृत क्षेत्र में व्यावहारिकता पर निर्भर करता है। अतः किसी भी समस्या के औचित्य एवम् परीक्षण पर विचार करना महत्त्वपूर्ण होता है क्योंकि औचित्य ही समस्या की उपादेयता को सिद्ध करता है। शोध अध्ययन का निम्न दृष्टिकोण से औचित्य बढ़ जाता है :–

4.1 विद्यालयों के दृष्टिकोण से औचित्य :–

विद्यालय का मुख्य लक्ष्य विद्यार्थी के भविष्य में सफलता पाने का आधार तैयार करना होता है। विद्यालय का कार्य भविष्य में प्राप्त किये जाने वाले रोजगारों के लिये विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण और दक्षताओं को प्रदान कर देना मात्र ही नहीं है वरन् एक व्यक्ति विशेष का सकारात्मक सामाजिक विकास कर उसे समाज का एक जिम्मेदार नागरिक बनाना भी है। वर्तमान में विद्यालयों का वातावरण विद्यार्थी के चहुँमुखी व्यक्तित्व के विकास की ओर ध्यान नहीं दे रहा है। शोध अध्ययन से प्राप्त होने वाले परिणाम राज्य के विद्यालयों के लिये उपयोगी होंगे क्योंकि शोध अध्ययन से प्राप्त परिणाम विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों एवं गुणावत्तापूर्ण शिक्षा को सुनिश्चित करने हेतु प्रेरित कर सकेंगे।

4.2 अध्यापकों के दृष्टिकोण से औचित्य :– शोध अध्ययन से प्राप्त परिणाम अध्यापकों को पहले से ज्यादा जवाबदेह बनाने में सहायक होंगे। अतः शिक्षण दक्षता में वृद्धि करने के लिए शोध अध्ययन के परिणाम अभिप्रेरक का कार्य कर सकते है। शोध

अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षो के आधार अध्यापक अपने विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों का मूल्यांकन उचित ढ़ंग से कर सकेंगे।

4.3 **विद्यार्थियों के दृष्टिकोण से औचित्य :–** शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों के संज्ञात्मक पक्ष का विकास करने के साथ साथ भावात्मक एवं क्रियात्मक पक्ष का विकास करना भी होता है। अतः शोध अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने में सहायक सिद्ध होंगे।

5 शोध अध्ययन से सम्बंधित पूर्व शोध कार्यो की समीक्षा :–

- **वर्मा (2003)** ने माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का उनकी बुद्धि, समायोजन तथा उपलब्धि प्रेरणा से सम्बन्ध का अध्ययन करने हेतु 600 विद्यार्थियों का न्यादर्श के रूप में चयन किया। शोध कार्य हेतु शोधार्थी द्वारा वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया। शोध अध्ययन में निष्कर्ष के रूप में यह पाया गया है कि माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की उपलब्धि प्रेरणा का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। विद्यार्थियों की बुद्धि का भी उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।
- **त्रिपाठी (2004)** ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की उपलब्धि प्रेरणा का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करने हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया। शोध अध्ययन में निष्कर्ष के रूप में यह पाया गया है कि विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर उपलब्धि प्रेरणा का अधिक प्रभाव पड़ता है। लिंग एवं परिवेश का शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। अतः उपलब्धि प्रेरणा से शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होती है।
- **पाटिल (2006)** ने शोध अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया। शोध अध्ययन के निष्कर्ष के रूप में संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक सम्बंध नहीं पाया गया। पुरूष एवं महिला की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
- **मुछाल एवं कुमार (2008)** ने उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा का उनके समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के सम्बंध में अध्ययन हेतु यादृच्छिक

प्रतिचयन के आधार पर माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, उत्तर प्रदेश के उच्चतर माध्यमिक स्तर कक्षा–11 के 60 विद्यार्थियों को न्यादर्श के लिए चयनित किया। शैक्षिक अभिप्रेरणा के अध्ययन हेतु टी.आर.शर्मा द्वारा निर्मित 'एकेडमिक एचीवमेंट मोटीवेशन टेस्ट' का प्रयोग किया गया। समायोजन के अध्ययन हेतु ए.के.पी. सिन्हा एवं आर.पी.सिंह द्वारा निर्मित एडजस्टमेंट इन्वेंटरी फॉर स्कूल स्टूडेंट का प्रयोग किया गया है। शैक्षिक उपलब्धि के रूप में कक्षा–10 के प्राप्तांकों को लिया गया। शोध अध्ययन में निष्कर्ष के रूप में उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा, उनके समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसम्बंध पाया गया। विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा, उनके समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि को सार्थक रूप से प्रभावित करती है। जब विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा उच्च स्तर की होती है तो उनके समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि का स्तर भी उच्च होता है।

- **यादव एवं नायक (2009)** ने दृष्टिबाधित, मूकबधिर एवं सामान्य विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करने हेतु उत्तरप्रदेश के वाराणसी, इलाहाबाद, गोरखपुर एवं लखनऊ जिलों के विशिष्ट एवं सामान्य विद्यालयों की हाईस्कूल कक्षाओं में अध्ययनरत 204 दृष्टिबाधित, 192 मूकबधिर एवं 216 सामान्य विद्यार्थियों का चयन स्तरीकृत दैव प्रतिदर्शन विधि द्वारा किया गया है। शोध उपकरण के लिए शोधार्थी द्वारा समायोजन के मापन के लिए सिंह एवं सेन गुप्ता (1987) द्वारा निर्मित हाईस्कूल समायोजन अनुसूची का उपयोग किया गया है। शोध अध्ययन में निष्कर्ष के रूप में यह पाया गया है कि दृष्टिबाधित एवं मूकबधिर विद्यार्थी सर्वाधिक महत्वपूर्ण ज्ञानेन्द्रियों का अभाव रखते है। मूक बधिर विद्यार्थियों ने अपेक्षाकृत समायोजन के अन्य सभी आयामों पर निम्न कोटि के समायोजन का प्रदर्शन करते है। वे केवल स्वास्थ्य सम्बंधी समायोजन में दृष्टिबाधितों के साथ कोई सार्थक अन्तर नहीं रखते है। दृष्टिबाधित विद्यार्थियों का समायोजन मूकबधिर विद्यार्थियों की तुलना में स्वास्थ्य के अतिरिक्त अन्य सभी आयामों में अच्छे समायोजन को प्रदर्शित करता है लेकिन सामान्य

विद्यार्थियों की तुलना में मूकबधिर विद्यार्थियों की भाँति ये भी निम्न कोटि का समायोजन रखते है।

- **चतुर्वेदी एवं सिंह (2009)** ने छात्राध्यापकों की संवेगात्मक बुद्धि और उनका समग्र व्यक्तित्व का अध्ययन करने हेतु विवरणात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया। शोध कार्य हेतु शोधार्थी द्वारा न्यादर्श चयन हेतु गुच्छ/समूह प्रतिदर्श चयन विधि का प्रयोग किया गया। 180 छात्राध्यापकों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया है। आँकडों को एकत्रित करने हेतु शोध उपकरण के लिए डॉ. ज्योति वशिष्ट (2004) द्वारा विकसित सांवेगिक बुद्धि परीक्षण एवं डॉ. प्रतिभा देव (1985) द्वारा विकसित स्व प्रत्यय सूची का प्रयोग किया गया है। शोध अध्ययन में निष्कर्ष के रूप में यह पाया गया है कि छात्राध्यापकों की संवेगात्मक बुद्धि और स्व प्रत्यय के मध्य कोई सार्थक धनात्मक सह सम्बंध नहीं है। महिला छात्राध्यापकों की संवेगात्मक बुद्धि एवं स्व प्रत्यय अपेक्षाकृत उच्च पाया गया है।
- **बानो एवं सिंह (2011)** ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि में सम्बंध का अध्ययन करने हेतु शोध का प्रारूप घटनोत्तर अनुसंधान प्रयोग किया है। शोध न्यादर्श चयन हेतु द्विस्तरीय न्यादर्श चयन विधि अपनाई गई है। प्रथम स्तर पर सरकारी विद्यालयों का चयन साधारण यादृच्छिक विधि द्वारा तथा 16 अनुदान प्राप्त विद्यालयों का चयन क्रमबद्ध यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया। द्वितीय स्तर पर चयनित विद्यालयों में से 300 छात्र एवं 300 छात्राओं का चयन क्रमबद्ध यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु टी परीक्षण प्रयुक्त किया गया। शोध अध्ययन में निष्कर्ष के रूप में यह पाया गया कि छात्र–छात्रा की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सकारात्मक सम्बंध पाया गया है। उच्च संवेगात्मक बुद्धि के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि निम्न संवेगात्मक बुद्धि के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च हैं। जिससे यह स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में उनकी संवेगात्मक बुद्धि की महत्वपूर्ण भूमिका है।
- **दुबे (2011)** ने विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर शैक्षिक अभिप्रेरणा तथा समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन करने हेतु हरियाणा शिक्षा बोर्ड की कक्षा–12

के 60 विद्यार्थियों को यादृच्छिक प्रतिचयन विधि के आधार पर न्यादर्श हेतु चयनित किया गया। शोध उपकरण के लिए टी.आर.शर्मा द्वारा निर्मित शैक्षिक अभिप्रेरणा परीक्षण तथा ए.के.पी. सिन्हा एवं आर.पी.सिंह द्वारा निर्मित समायोजन सूची का प्रयोग किया गया। प्रदत्तों से निष्कर्ष निकालने हेतु कार्ल पीयरसन द्वारा प्रतिपादित 'गुणनफल आघूर्ण विधि' से सह सम्बंध की गणना की गयी। शोध अध्ययन में निष्कर्ष के रूप में यह पाया गया है कि उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा, समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सह सम्बंध होता है। विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा, उनके समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि को सार्थक रूप से प्रभावित करती है। शैक्षिक अभिप्रेरणा, उच्च शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन में सहायक होती है।

- **देवगन एवं बहोल (2012)** ने अल्पसंख्यक वर्ग की छात्राओं के सशक्तीकरण के सम्बंध में उनके समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करने हेतु अप्रायिकता न्यादर्श विधि के अन्तर्गत सोद्देश्य विधि के द्वारा 120 छात्राओं का न्यादर्श हेतु चयन किया। शोध अध्ययन में निष्कर्ष के रूप में यह पाया गया है कि अल्पसंख्यक वर्ग की छात्राओं के सशक्तीकरण में सार्थक अन्तर पाया गया। अल्पसंख्यक वर्ग की छात्राओं के समायोजन में सार्थक अन्तर पाया गया। अल्पसंख्यक वर्ग की छात्राओं के सशक्तीकरण एवं समायोजन के मध्य पूर्ण ऋणात्मक सहसम्बंध पाया गया जबकि सशक्तीकरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य उच्च धनात्मक सहसम्बंध पाया गया।

- **जोशी एवं नट (2013)** ने नवीं कक्षा के विद्यार्थियों के समायोजन पर विद्यालय पृष्ठभूमि के प्रभाव का अध्ययन करने हेतु स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा छत्तीसगढ़ के बिलासपुर जिले के बिल्हा ब्लॉक के शासकीय विद्यालय का चयन किया गया। शोध उपकरण हेतु ए.के.पी. सिन्हा एवं आर.पी.सिंह की विद्यालय समायोजन सूची का प्रयोग किया गया। शोध अध्ययन में निष्कर्ष के रूप में नवीं कक्षा के विद्यार्थियों के समायोजन पर विद्यालय पृष्ठभूमि का सार्थक प्रभाव पाया गया है।

- **कश्यप एवं श्रीवास्तव (2013)** ने छात्राध्यापकों की संज्ञानात्मक बुद्धि तथा उनकी संवेगात्मक बुद्धि के मध्य सहसम्बंध का अध्ययन करने हेतु आँकडो के संकलन हेतु सर्वेक्षण पद्धति का प्रयोग किया। शोध कार्य हेतु न्यादर्श का चयन स्तरीकृत आनुपातिक सम्भाविक प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया है। 120 छात्राध्यापकों का न्यादर्श के रूप में चयन किया गया है। संज्ञानात्मक बुद्धि एवं संवेगात्मक बुद्धि के मध्य सहसम्बंध ज्ञात करने के लिए अनुकूल हिदे, संजय पेथे तथा उपिन्दर धर द्वारा निर्मित संवेगात्मक बुद्धि मापनी एवं एस. जलोटा द्वारा निर्मित साधारण मानसिक योग्यता परीक्षण का उपयोग किया गया है। शोध अध्ययन में निष्कर्ष के रूप में यह पता चलता है कि छात्राध्यापकों की संज्ञानात्मक एवं संवेगात्मक बुद्धि के मध्य सार्थक सहसम्बंध है।
- **शर्मा (2014)** ने शोध अध्ययन हेतु विवरणात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया। स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा धौलपुर जिले के कक्षा–11 के 240 विद्यार्थियों का न्यादर्श के लिये चयन किया। शोध उपकरण हेतु अनुकूल हिदे, संजय पेथे तथा उपिन्दर धर द्वारा निर्मित संवेगात्मक बुद्धि प्रमापनी का प्रयोग किया गया। शोध अध्ययन में निष्कर्ष के रूप में यह पाया गया है कि संवेगात्मक बुद्धि, शैक्षिक उपलब्धि से सम्बंधित नहीं है। संवेगात्मक बुद्धि वातावरण पर निर्भर करती है, जिसमें बालक को शिक्षक एवं मार्गदर्शकों के माध्यम से संवेगात्मक बुद्धि को विकसित करने का अवसर मिलता है।
- **शुक्ला (2015)** ने सामान्य एवं अस्थि विकलांग विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करने हेतु यादृच्छिक विधि द्वारा ग्वालियर जनपद के पाँच विद्यालयों का न्यादर्श के लिए चयनित किया। शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा शोध उपकरण के लिए वी.के. मित्तल की समायोजन अनुसूची का प्रयोग किया गया। शोध अध्ययन में निष्कर्ष के रूप में यह पाया गया कि अस्थि विकलांग विद्यार्थी, सामान्य विद्यार्थियों के साथ गृह, स्वास्थ्य एवं संवेगात्मक समायोजन कर लेते है परन्तु सामाजिक एवम् विद्यालयी समायोजन नहीं कर पाते है। सामान्य एवं अस्थि विकलांग बालकों के समायोजन में अन्तर पाया गया है। अस्थि

विकलांग विद्यार्थियों की शिक्षा की विशेष सुविधा न होने के कारण अन्तर दृष्टिगोचर होता है।

- **सिंह (2015)** ने विद्यालयीय शिक्षा स्तर पर आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करने हेतु माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का न्यादर्श के रूप में चयन किया। शोध कार्य में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। शोध अध्ययन में निष्कर्ष के रूप में यह पाया गया कि आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यार्थियों का भावात्मक, सामाजिक तथा शैक्षिक क्षेत्र में समायोजन स्तर समान है।
- **शुक्ला (2016)** ने विद्यालयों में सामान्य एवं मूक बधिर विद्यार्थियों का समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करने हेतु समायोजन के संवेगात्मक, सामाजिक एवं शैक्षिक क्षेत्रों को सम्मिलित किया है। शोध अध्ययन में वर्णात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। यादृच्छिक विधि द्वारा 100 विद्यार्थियों का न्यादर्श के रूप में चयन किया गया है। शोध उपकरण हेतु डॉ. ए.के.पी. सिन्हा तथा डॉ. आर.पी. सिंह द्वारा निर्मित स्कूली छात्रों के लिए समायोजन सूची का प्रयोग किया गया है। शोध अध्ययन के निष्कर्ष से पता चलता है कि सामान्य विद्यार्थी, मूक बधिर विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक समायोजित होते है। सामान्य विद्यार्थियों का शैक्षिक समायोजन अपेक्षाकृत उत्तम पाया गया है।

6 प्रस्तुत शोध क्षेत्र में सन्निहित अंतरालों अथवा रिक्तियों की पहचान :—

यद्यपि भारत में शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता हेतु अनेक शोध कार्य किये गये। इन शोध कार्यो का प्रभाव प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ा। विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि ने उनकी संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन को प्रभावित किया। संवेगात्मक बुद्धि, समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में अनेक शोध कार्य किये गये है। लेकिन कोई ऐसा शोध अध्ययन नहीं पाया गया जो विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन का शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में हो। तथापित इन शोध कार्यो में शोधार्थी द्वारा निम्नलिखित अंतरालों एवं रिक्तियों की पहचान की गई है।

- विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन का शैक्षिक उपलब्धि के सम्बंध में अध्ययन का अभाव पाया गया।

- विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि के सम्बंध में अध्ययन का अभाव पाया गया।
- आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन का शैक्षिक उपलब्धि के सम्बंध में अध्ययन का अभाव पाया गया।

अतः प्रस्तुत शोध कार्य के माध्यम से शोध अंतराल की पूर्ति हो सकेगी।

7 शोध अध्ययन के उद्देश्य

1) आवासीय तथा गैर आवासीय विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करना।
2) आवासीय तथा गैर आवासीय विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करना।
3) आवासीय विद्यालय के छात्र तथा गैर आवासीय विद्यालय के छात्र की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करना।
4) आवासीय विद्यालय की छात्रा तथा गैर आवासीय विद्यालय की छात्रा की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करना।
5) आवासीय विद्यालय के छात्र तथा गैर आवासीय विद्यालय के छात्र के समायोजन का अध्ययन करना।
6) आवासीय विद्यालय की छात्रा तथा गैर आवासीय विद्यालय की छात्रा के समायोजन का अध्ययन करना।
7) आवासीय विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बंध का अध्ययन करना।
8) आवासीय विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बंध का अध्ययन करना।
9) गैर आवासीय विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बंध का अध्ययन करना।
10) गैर आवासीय विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बंध का अध्ययन करना।

8 शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ:–

शोध कार्य में शून्य परिकल्पना प्रयुक्त की जायेगी।

1) आवासीय तथा गैर आवासीय विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2) आवासीय तथा गैर आवासीय विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
3) आवासीय विद्यालय के छात्र तथा गैर आवासीय विद्यालय के छात्र की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
4) आवासीय विद्यालय की छात्रा तथा गैर आवासीय विद्यालय की छात्रा की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
5) आवासीय विद्यालय के छात्र तथा गैर आवासीय विद्यालय के छात्र के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
6) आवासीय विद्यालय की छात्रा तथा गैर आवासीय विद्यालय की छात्रा के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
7) आवासीय विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक सहसम्बंध नहीं होता है।
8) आवासीय विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक सहसम्बंध नहीं होता है।
9) गैर आवासीय विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक सहसम्बंध नहीं होता है।
10) गैर आवासीय विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक सहसम्बंध नहीं होता है।

9 शोध विधि एवं प्रक्रिया :–

9.1 शोध अध्ययन में प्रयुक्त न्यादर्श :–

शोध अध्ययन में राजस्थान राज्य के 600 विद्यार्थी को सोद्देश्य **"यादृच्छिक विधि"** के अनुरूप दिये गये निर्देशों के अनुसार **"न्यादर्श"** के लिए चयनित किया जायेगा। कुल न्यादर्श इकाइयों का चयन एवम् वर्गीकरण सोद्देश्य यादृच्छिक

प्रतिचयन विधि के द्वारा चयनित किया जायेगा। न्यादर्श के चयन में वस्तुनिष्ठता लाने के लिए इसके चयन में विद्वानों के व्यावसायिक अनुभवों का लाभ उठाया जायेगा। जिससे न्यादर्श चयन में प्रविष्ट होने वाली त्रुटियों से बचा जा सके।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त न्यादर्श का वर्गीकरण इस प्रकार होगा :—

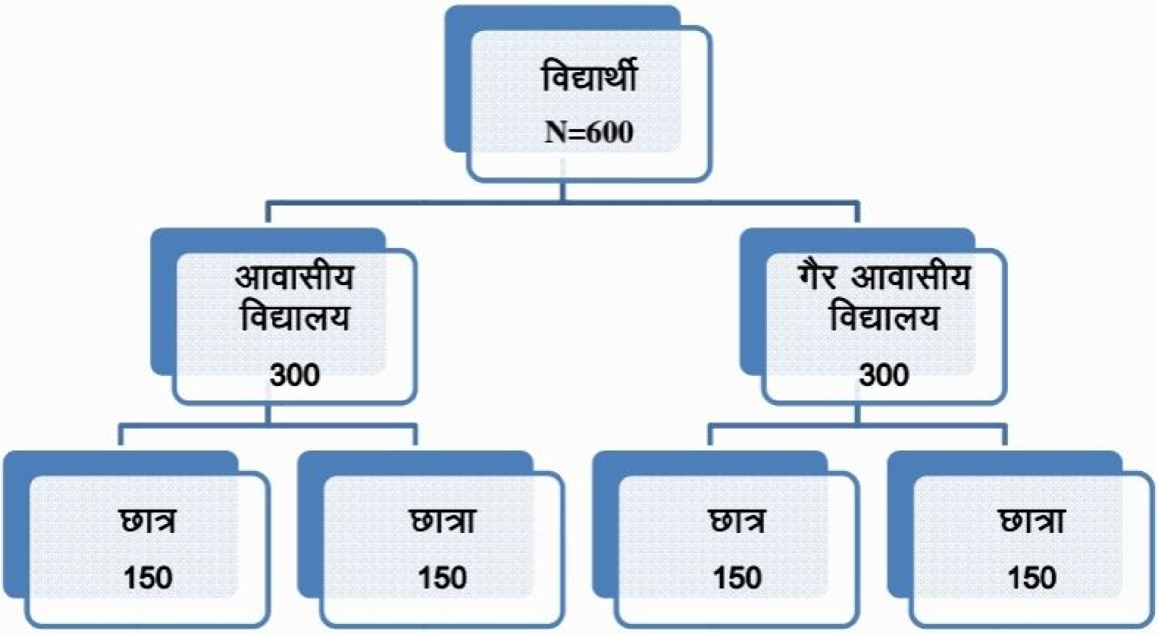

9.2 शोध अध्ययन में प्रयुक्त विधि :—

शोध अध्ययन में आदर्श मूलक " **विवरणात्मक सर्वेक्षण विधि**" का चयन किया जायेगा।

9.3 शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :—

शोध अध्ययन में दत्त संकलन हेतु निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया जायेगा :—

1 Emotional Intelligence Scale (2014) - Arun Kumar Singh and Shruti Narain

2 समायोजन प्रमापनी — शोधार्थी द्वारा निर्मित।

3 शैक्षिक उपलब्धि के मापन हेतु विद्यार्थियों के पूर्व कक्षा परिणामों को लिया जायेगा।

10 शोध अध्ययन की कार्य योजना :—

प्रस्तुत शोध अध्ययन को व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक विधि से प्रस्तुत करने के लिए शोधार्थी अपने विषय को निम्नलिखित अध्यायों में प्रस्तुत करेगा :—

10.1 प्रथम अध्याय : समस्या एवं उसकी आवश्यकता :—

प्रस्तुत शोध अध्ययन के प्रथम अध्याय में प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रस्तावना, समस्या कथन, विषय चयन की आवश्यकता, समस्या का महत्व, शोध अध्ययन में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण, शोध अध्ययन का औचित्य, शोध अध्ययन के उद्देश्य, शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ, शोध अध्ययन में प्रयुक्त न्यादर्श, शोध अध्ययन का परिसीमांकन, शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण, शोध अध्ययन में प्रयुक्त विधि, शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी आदि का विवरण प्रस्तुत किया जायेगा।

10.2 द्वितीय अध्याय : सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन :—

प्रस्तुत शोध अध्ययन के द्वितीय अध्याय में प्रस्तावना, सम्बन्धित साहित्य के पुनरावलोकन का अर्थ, उद्देश्य, आवश्यकता, कार्य, महत्व, लाभ, सीमाएँ, सम्बन्धित साहित्य के पुनरावलोकन के स्त्रोत, साहित्य का संग्रहण, संवेगात्मक बुद्धि, समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि पर हुए शोध का विवरण एवं पुनरावलोकन से प्राप्त निष्कर्षो को प्रस्तुत किया जायेगा।

10.3 तृतीय अध्याय : शैक्षिक अनुसंधान की प्रक्रियाः—

प्रस्तुत शोध अध्ययन के तृतीय अध्याय में शैक्षिक अनुसंधान की प्रक्रिया में अनुसंधान का अर्थ, परिभाषाएँ, महत्व, शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ, शोध न्यादर्श, न्यादर्श की आवश्यकता, विशेषताएँ, शोध में प्रयुक्त न्यादर्श, शोध में प्रयुक्त उपकरण, शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी आदि का विवरण प्रस्तुत किया जायेगा।

10.4 चतुर्थ अध्याय : दत्त संकलन, विश्लेषण, निर्वचन एवम् व्याख्या :—

प्रस्तुत अध्ययन के चतुर्थ अध्याय में प्राप्त दत्तों का मध्यमान, मानक विचलन, टी—मान, सहसम्बंध सांख्यिकी की सहायता से उद्देश्यों का विवेचन एवं विश्लेषण सारणी एवं लेखाचित्र के माध्यम से प्रस्तुत किया जायेगा।

10.4 चतुर्थ अध्याय : दत्त संकलन, विश्लेषण, निर्वचन एवम् व्याख्या :–

प्रस्तुत अध्ययन के चतुर्थ अध्याय में प्राप्त दत्तों का मध्यमान, मानक विचलन, टी–मान, सहसम्बंध सांख्यिकी की सहायता से उद्देश्यों का विवेचन एवं विश्लेषण सारणी एवं लेखाचित्र के माध्यम से प्रस्तुत किया जायेगा।

10.5 पंचम अध्याय : शोध निष्कर्ष, शैक्षिक निहितार्थ एवं सुझाव :–

प्रस्तुत अध्ययन के पंचम अध्याय में दत्तों के विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष, शैक्षिक निहितार्थ एवं भावी शोध हेतु सुझावों को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया जायेगा।

10.6 षष्ठम् अध्याय : शोध सारांश:–

प्रस्तुत शोध अध्ययन के षष्ठम् अध्याय में सम्पूर्ण शोध अध्ययन का सारांश अन्तिम अध्याय में प्रस्तुत किया जायेगा।

Bibliography

- Agarwal, J.C. (1966), Education Research: An Introduction, Arya Book Dept. New Delhi
- Patil, A.B. (2006), Emotional Intelligence among student teachers in relation to sex, faculty and academic achievement, *Edutracks*, *8*(1), 21-23
- Sharma, A. (2014), Emotional Intelligence in Relation to Academic Achievement, *Journal of Indian Education, 40(1),* 77-85
- कश्यप, एन. एवं श्रीवास्तव, वि. (2013), छात्राध्यापकों की संज्ञानात्मक बुद्धि तथा उनकी संवेगात्मक बुद्धि के मध्य सहसम्बंध का अध्ययन, *परिप्रेक्ष्य, 20*(3), 115—130
- चतुर्वेदी, आर.के. एवं सिंह, एस. (2009), छात्राध्यापकों की संवेगात्मक बुद्धि और उनका समग्र व्यक्तित्व, *परिप्रेक्ष्य, 16*(2), 63—81
- जोशी, एन. एवं नट, आर. (2013), नवीं कक्षा के विद्यार्थियों के समायोजन पर विद्यालय पृष्ठभूमि के प्रभाव का अध्ययन, *भारतीय आधुनिक शिक्षा, 34*(2), 42—49
- दुबे, बी. (2011), विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर शैक्षिक अभिप्रेरणा तथा समायोजन का प्रभाव, *भारतीय आधुनिक शिक्षा, 31*(3), 89—95
- देवगन, पी. एवं बघेल, ए. (2012), अल्पसंख्यक वर्ग की छात्राओं के सशक्तीकरण के सम्बंध में उनके समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन, *परिप्रेक्ष्य, 19*(2), 119—134
- बानो, आर. एवं सिंह, बी. (2011), माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि में सम्बंध, *परिप्रेक्ष्य, 18*(2), 109—120
- पाण्डेय, के. एवं श्रीवास्तव, एस. (2007), शिक्षा मनोविज्ञान भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टि, टाटा मेग्रो हिल पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली
- मुछाल, एम. एवं कुमार एस. (2008), उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा का उनके समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के सम्बंध में अध्ययन, *परिप्रेक्ष्य, 15*(3), 89—100

- यादव, के. एवं नायक, जी.पी. (2009), दृष्टिबाधित, मूकबधिर एवं सामान्य विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन, *परिप्रेक्ष्य, 16*(3), 43–52
- वर्मा, एम.के. (2003), *माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का उनकी बुद्धि, समायोजन तथा उपलब्धि प्रेरणा से सम्बंध,* बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ.प्र.)
- शुक्ला, एस. (2015), सामान्य एवं अस्थि विकलांग विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन, *परिप्रेक्ष्य 22*(2), 91–102
- सिंह, एस. (2015), विद्यालयीय शिक्षा स्तर पर आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यार्थियो के समायोजन का अध्ययन, *परिप्रेक्ष्य 22*(1), 83–106
- शुक्ला, एस.(2016), विद्यालयों में सामान्य एवं मूक बधिर विद्यार्थियो के समायोजन का अध्ययन, *परिप्रेक्ष्य 22*(1), 105–112
- त्रिपाठी, के. (2004), माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की उपलब्धि प्रेरणा का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव, *भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, 23*(1)
- http://shodhganga.inflibnet.ac.in
- http://shodhgangotri.inflibnet.ac.in
- http://www.ncert.nic.in
- http://www.nuepa.org
- http://www.education.rajasthan.gov.in
- https://scholar.google.co.in

सुनील कुमार
08/12/17

Signature of the Candidate with date

Outline Approved

Name and Signature of supervisor with date & Seal.

सह-आचार्य
Associate Professor
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर
Regional Institute of Education, AJMER